इस्लामी तहरीक
का
आम कारकुन

ख़ुर्रम मुराद *(रह0)*

अनुवाद

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

विषय-सूची

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।"

इस्लामी तहरीक का आम कारकुन

हमारी आज की ज़रूरत यह है कि हम इस बात पर ग़ौर करें कि हम इस्लामी तहरीक के आम कारकुन कैसे बन सकते हैं? यह हमारी अमली ज़रूरत है। मैंने इसमें 'मिसाली' का लफ़्ज़ हटाकर 'आम' का इज़ाफ़ा भी कर दिया है। यह भी एक जसारत (दुस्साहस) है। अस्ल बात यह है कि मिसाली कारकुन का नक़्शा खींचना कुछ मुश्किल नहीं लेकिन मिसाली कारकुन का नक़्शा खींचने में आम तौर पर एक कमज़ोरी यह पैदा हो जाती है कि हम उस नक़्शे को सुनते भी हैं, उसके लिए सर भी धुनते हैं, उसकी ख़ूब बढ़-चढ़कर तारीफ़ भी करते हैं लेकिन हमारे दिल में यह ख़याल पैदा होता है कि हम ऐसे नहीं बन सकते। जबकि मिसाली, आइडियल या मॉडल होता ही इसी लिए है कि वह हमारी कोशिश और तलब के लिए सहारे का काम करे और हमारे सामने ऊपर से ऊपर उठने के लिए एक मेयार पेश करे।

कारकुन किसे कहते हैं?

आम कारकुन से मुराद वह कारकुन है जिसे अगर हम समझ लें तो हममें से हर शख़्स कारकुन बन सकता है, बल्कि हममें बहुत-से इस वक़्त कारकुन होंगे भी और जो नहीं हैं वे इसकी कोशिश भी कर सकते हैं। 'कारकुन' का लफ़्ज़ भी अपनी जगह पर ग़ौर करने के क़ाबिल है। अल्फ़ाज़ और इस्तिलाहों (परिभाषाओं) के साथ एक अजीब मामला यह है कि ज़माने के उलट-फेर के साथ उनके मानी और मतलब बदलते रहते हैं और कभी-कभी मुख़ालिफ़ मानी भी इख़्तियार कर लिए जाते हैं। कारकुन के मानी बड़े वाज़ेह और साफ़ हैं। कारकुन के मानी काम

करनेवाले के होते हैं। ज़ाहिर बात है कि काम करना किसी शख़्स की एक सिफ़त है और यह सिफ़त को ज़ाहिर करना है। उसकी अस्ल सिफ़ात का इज़्हार जिन अल्फ़ाज़ से होता है, उनकी तलाश में अगर हम तहरीक के उन सरचश्मों की तरफ़ जाएँ जिनको हम क़ुरआन और सुन्नत और नबी *(सल्ल.)* के उस्वे (नमूने) के नाम से जानते हैं, तो वहाँ पर हम मोमिन, मुस्लिम, मुहाजिर, मुत्तक़ी, मोहसिन और मुजाहिद के अल्फ़ाज़ पाएँगे।

हमने कारकुन का लफ़्ज़ क्यों इख़्तियार किया? हमने महसूस किया कि एक और लफ़्ज़ के इज़ाफ़े की ज़रूरत पड़ गई है। इसलिए कि वे अल्फ़ाज़ जो पहले सिफ़त थे, मिसाल के तौर पर मोमिन और मुस्लिम भी एक सिफ़त थी, वे अब सिर्फ़ नाम बनकर रह गए हैं। अब वे एक चीज़ और एक शख़्स का नाम बन गए हैं और अपनी इस सिफ़त से उनका रिश्ता कट चुका है। लेकिन ज़माने की उलट-फ़ेर ने जो काम मोमिन और मुस्लिम के साथ किया वह काम कारकुन लफ़्ज़ के साथ भी हो सकता है। अगर हम आज अपनी गुफ़्तुगू में 'फ़अ्आल कारकुन' (कर्मठ कार्यकर्ता) और 'ग़ैर-फ़अ्आल कारकुन' (अकर्मठ कार्यकर्ता) और तहरीक में 'जुमूद' (जड़ता) की बात करें तो ज़ाहिर है यह ऐसे दो अल्फ़ाज़ हैं जो एक-दूसरे के बिलकुल उलट मानी रखते हैं, जो हम एक इस्तिलाह में जमा करेंगे। हालाँकि ग़ैर-फ़अ्आल कारकुन और तहरीक में जुमूद ये दो अल्फ़ाज़ जमा नहीं हो सकते। कारकुन अगर सिफ़त के बजाय सिर्फ़ एक नाम बनकर रह जाए और तहरीक भी सिफ़त के बजाय किसी चीज़ का नाम हो जाए तो फिर यह मुमकिन है कि वे नाम अपनी अस्ल सिफ़ात से दूर होते चले जायँ। इसलिए यह ज़रूरी है कि पहले ही क़दम पर हम इस बात को अच्छी तरह समझ लें और जान लें कि कारकुन किसी चीज़ का नाम नहीं है। ग़ैर-फ़अ्आल कारकुन की इस्तिलाह एक ऐसी इस्तिलाह है जो बाहम टकराती है और एक-दूसरे के बिलकुल उलट मानी रखती है। कारकुन तो होता ही वह है जो सिर से पैर तक अपने मक़सद में डूबा हुआ हो और उसके लिए काम कर रहा हो। ऐसा कारकुन जो आम

लिहाज़ से भी कारकुन कहा जा सके, चाहे मिसाली कारकुन न हो, ऐसा कारकुन हम कैसे बन सकते हैं?

दो अहम तक़ाज़े

एक आम कारकुन बनने के लिए दो चीज़ों की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है। एक अपने दिल की तरफ़, दूसरी अपनी दावत और पैग़ाम की तरफ़। बात फैलाई भी जा सकती है और उसके बहुत सारे पहलू भी बयान किए जा सकते हैं, लेकिन तालीम और तरबियत का एक मुफ़ीद पहलू यह है कि बात को समेटकर और मुख़्तसर करके बयान किया जाए। किसी ने नबी *(सल्ल०)* से सवाल किया कि बस मुझे एक बात बता दीजिए जो मेरे लिए काफ़ी हो। नबी *(सल्ल०)* ने फ़रमाया—

> "कहो, मैं अल्लाह पर ईमान लाया, और उसपर मज़बूती के साथ जम जाओ।" (हदीस)

बस यही काफ़ी है। एक और आदमी नबी *(सल्ल०)* की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने कहा कि मुझे कुछ इस्लाम के बारे में बताइये। नबी *(सल्ल०)* ने उसको क़ुरआन मजीद की सूरा-99, ज़िलज़ाल पढ़ाई और जब उसने उसकी आख़िरी आयत पढ़ी जिसका तर्जुमा यह है, "जो शख़्स ज़र्रा बराबर नेकी करेगा वह उसको भी देख लेगा और जो ज़र्रा बराबर बुराई करेगा वह उसको भी देख लेगा" तो उसने कहा कि बस यह मेरे लिए काफ़ी है। इसपर नबी *(सल्ल०)* ने फ़रमाया कि किसी जन्नती को देखना हो तो इसे देख ले।

मैं भी चाहता हूँ कि बहुत मुख़्तसर अन्दाज़ में अपनी बात पेश करूँ। कारकुन के बारे में मुख़्तसर बात बस इतनी है कि एक कारकुन की एक उसकी अपने अन्दर की दुनिया है और एक उसके बाहर की, और अगर वह दोनों पर काम शुरू कर दे तो वह एक आम कारकुन बन सकता है। यहाँ अन्दर की दुनिया से मुराद दिल है और बाहर की दुनिया से मुराद दावत और पैग़ाम।

दिल की तरफ़ ध्यान दिया जाए

मैंने दिल का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है, और दिल का लफ़्ज़ कई मानी में इस्तेमाल होता है। यह क़ुरआन मजीद की बड़ी बुनियादी इस्तिलाह है। हर शख़्स की ज़िन्दगी और शख़्सियत का एक मरकज़ (केन्द्र) होता है, और यह मरकज़ उसके अन्दर मौजूद होता है। मरकज़ वह होता है जहाँ इनसानी मुहर्रिकात (उभारनेवाली चीज़ें), जज़बात, इरादे, आरज़ुएँ और मक़सद अपना ठिकाना बनाते हैं। यही वह अन्दर की दुनिया है जिसके मुताबिक़ बाहर की दुनिया बनती है। इसी लिए कारकुन के कारकुन होने के अमल की शुरुआत इस अन्दर की दुनिया से होनी चाहिए। यह मरकज़ दिल है। दिल के मानी सिर्फ़ उस पम्प के नहीं हैं जो रगों में हर वक़्त ख़ून को गर्दिश में लाता है। बल्कि दिल वह है जो ज़िन्दगी के अन्दर जज़बात, मुहर्रिकात, इरादे और मक़सद को परवान चढ़ाता और तरक़्क़ी देता है, और जैसी चीज़ और क़िस्म वहाँ से जन्म लेगी उसके असरात लाज़मी तौर पर पूरी ज़िन्दगी पर पड़ेंगे। इसी लिए अल्लाह के नबियों ने हमेशा तब्दीली के काम की शुरुआत यहीं से की और इसी पर क़ायम रहे और आख़िरी वक़्त तक इसी की दावत देते रहे।

नबी *(सल्ल.)* ने एक हदीस में इसी पहलू पर बड़ा ज़ोर देते हुए फ़रमाया कि इनसानी जिस्म में गोश्त का एक लोथड़ा है। अगर वह सुधर जाए तो सारी ज़िन्दगी सुधर जाएगी और अगर वह बिगड़ जाए तो सारी ज़िन्दगी बिगड़ जाएगी। अगर उसमें बिगाड़ और फ़साद हो तो पूरा जिस्म, जो ज़ाहिरी हाथ-पाँव हैं, बिगाड़ और फ़साद का शिकार हो जाँएगे और मुतास्सिर होंगे। मानो इनसान के ज़ाहिरी आमाल, काम, तहज़ीब, सोसायटी और समाज सबमें फ़साद और बिगाड़ पैदा होगा। अगर इसमें इस्लाह हो जाए और भलाई पैदा हो जाए तो फिर अख़लाक़ और आमाल, काम और बात, तहज़ीब व तमद्दुन और सोसाइटी सबकी इस्लाह हो जाएगी। फिर नबी *(सल्ल.)* ने फ़रमाया कि अच्छी तरह सुन लो कि यह लोथड़ा दिल है।

भला-चंगा दिल

क़ुरआन मजीद ने भी इस बात को बार-बार वाज़ेह किया है। एक तरफ़ तो यह बात वाज़ेह की है कि आख़िरत में नजात और कामियाबी का दारोमदार दिल पर है—

> "वह शख़्स अल्लाह के ग़ज़ब से नजात पाएगा जो भला-चंगा दिल लेकर आएगा।" (क़ुरआन, 26:89)

दूसरी जगह पर है कि देखो जन्नत क़रीब आ गई है और वह ख़ुदा की नाफ़रमानी से बचनेवालों के लिए ज़्यादा दूर नहीं है। उसकी ख़ुशख़बरी उन लोगों के लिए है जो बार-बार अपने रब की तरफ़ लौटनेवाले हैं और जो अपने रब से डरते हैं—

> "यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था, हर उस शख़्स के लिए जो बहुत रुजू करनेवाला और बड़ी निगरानी करनेवाला था, जो बेदेखे रहमान से डरता था और जो बार-बार लौटनेवाला दिल लिए हुए आया है।" (क़ुरआन, 50:32,33)

बार-बार लौटना भी दिल की सिफ़त है कि आदमी बार-बार नीचे गिरता है और फिर उठकर खड़ा होता है। पीछे हटता है, फिर आगे बढ़ता है और बार-बार लौटकर आता है। यह दिल के इरादे के बग़ैर मुमकिन नहीं है।

दिल की दूसरी सिफ़त ख़शीयत है। ख़शीयत भी दिल का अमले-ख़ैर है। जिस्म कपकपाए, रोंगटे खड़े हों, हाथ-पाँव नर्म पड़ जाएँ, ये सब ज़ाहिर की चीज़ें हैं लेकिन ख़शीयत का ठिकाना और घर वही दिल है।

दिल की तीसरी सिफ़त भला-चंगा दिल है। इस आयत के आख़िर में यह फ़रमाकर बात बिलकुल वाज़ेह कर दी कि जो एक अल्लाह की तरफ़ रुजू करनेवाला दिल लेकर आया वही उस जन्नत का हक़दार ठहरेगा। वही सही मानी में मुत्तक़ी और परहेज़गार है। उसी के लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी है। यह बात सिर्फ़ आख़िरत ही की बात नहीं है, बल्कि दुनिया

के मामले में भी इस बात को वाज़ेह किया गया है—

> "हक़ीक़त यह है कि आँखें अन्धी नहीं होतीं मगर वे दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।" (क़ुरआन, 22:46)

मानो आँखें देखती रहती हैं, दिल सोचते रहते हैं, कान सुनते रहते हैं, लेकिन दिल अन्धा हो जाता है। दिल सुनने से इनकार कर देता है। दिल का सोचना-समझना ख़त्म हो जाता है। देखने में इनसान की हर चीज़ अपनी जगह होती है, ज़िन्दगी के काम भी होते हैं, दफ़्तर भी होते हैं, तहरीकी सरकुलर भी होते हैं, इजतिमा भी होते हैं, उसकी भाग-दौड़ भी होती है, कोशिश और मेहनत भी जारी होती है, लेकिन अस्ल दुनिया यानी दिल से राबता ख़त्म हो जाता है।

क़ुरआन मजीद की इस आयत में जहाँ मर्ज़ की तरफ़ इशारा किया गया है वहीं यह भी वाज़ेह किया गया है कि मर्ज़ का सरचशमा भी दिल है। "उनके दिलों में मर्ज़ है।" (क़ुरआन) इसी लिए बाहर जो कुछ भी पेश आ रहा है, उसका सरचशमा अगर कोई है तो वह दिल है। लिहाज़ा ज़िन्दगी की जो भी ज़ाहिरी ख़राबियाँ हैं उन सबका सरचशमा और स्रोत अगर तलाश करना है तो अपने दिल की तरफ़ रूजू करना होगा। इसी तरह अगर किसी को आम कारकुन भी बनना है तो उसको इससे छुटकारा नहीं कि वह अपने अन्दर की दुनिया की तरफ़ तवज्जोह दे, उसकी फ़िक्र करे और उसके ऊपर काम करे और इसके साथ-साथ बाहर की दुनिया की भी फ़िक्र करे। दिल सुधरेगा तो जिस्म सुधरेगा, और इस तरह सारी ज़िन्दगी सुधर जाएगी। हमें शिकायत रहती है कि लोग वक़्त पर इजतिमा में नहीं आते, रिवायात टूट रही हैं। इसकी क्या वजह है? हमें फ़िक्र है कि लोग बरसों से तहरीक से मुत्तफ़िक़ हैं और आगे नहीं बढ़ते। इसकी क्या वजह है? हम आपस में बयान करते हैं कि मस्जिदों में लोग नमाज़ के लिए हाज़िर नहीं होते। इसकी क्या वजह है? अगर ग़ौर किया जाए तो इन सबकी बुनियादी वजह न तक़रीरों की कमी है, न लिट्रेचर की और न ही नसीहतों की, बल्कि अस्ल में कमी इस बात की है कि हम

ख़ुद अपने अन्दर की दुनिया से बेख़बर और ग़ाफ़िल हैं—

"तो अल्लाह ने उन्हें उनका अपना नफ़्स भुला दिया।"

(क़ुरआन, 59:19)

अगर हम कभी इस मक़ाम तक पहुँच जाएँ, ख़ुदा का फ़ज़्ल है कि अभी नहीं पहुँचे लेकिन इससे होशियार रहना ज़रूरी है, तो फिर हम अपने आप को भूल जाते हैं। जब हम अपने आप को भूल जाते हैं तो फिर अपने मक़सद को, अपने कारकुन होने को, अपने नस्बुल-ऐन को और अपने काम को कैसे याद रख सकते हैं?

दिल की इस्लाह

अगर हम डोरी के इस सिरे को मज़बूती से पकड़ लें और यहाँ से अपने काम की शुरूआत करें और ख़ात्मा भी, और हमेशा इस पहलू को अपने सामने रखें तो फिर हमारे सामने सवाल यह पैदा होता है कि इसकी इस्लाह कैसे हो और इसकी तरफ़ तवज्जोह कैसे करें?

दिल हमारे अन्दर के जज़बात, उभारनेवाली ताक़त, इरादे और मक़सद का घर है और जैसे इरादे, मक़सद, जज़बात, उभारनेवाली ताक़त और ख़ाहिशें और तमन्नाएँ वहाँ बसेरा करेंगी और डेरा डालेंगी वैसी ही हमारे दिल की दुनिया बनेगी। इसलिए कुछ तो वे चीज़ें हैं जिन्हें हमको वहाँ बिठाने और मज़बूती के साथ जमाने की कोशिश करनी है और कुछ उसके ज़रीए और साधन हैं।

मैं आज की गुफ़्तुगू में ज़रीओं पर तो बात नहीं करूँगा, लेकिन उन कुछ बुनियादी बातों को ज़रूर बयान करूँगा जिनकी तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है।

पूरी ज़िन्दगी का सौदा

पहली बात यह कि अपने दिल को इस बात पर मुत्मइन करना है कि यह सारी ज़िन्दगी का सौदा है जो हमने तहरीक में आकर किया है।

इसलिए कि ईमान के मानी ही सारी ज़िन्दगी के सौदे के हैं। ईमानवाले तो वे हैं जो अपने आप को अल्लाह की ख़ुशी की तलाश में बेच देते हैं। इस चीज़ को बार-बार दिल में बिठाने, इसको याद करने और इसकी नसीहत दिल को सुनाने की ज़रूरत है। इसलिए कि दिल की आदत यह है कि किसी चीज़ को सुन भी लेता है, समझ भी लेता है, इख़्तियार भी कर लेता है, मगर उससे बहुत जल्द ग़ाफ़िल और बेपरवाह भी हो जाता है। इस बेपरवाही और ग़फ़लत का इलाज यह है कि हम उसको बार-बार याद दिलाएँ। इसी लिए क़ुरआन भी 'याददिहानी' है और इसी लिए नसीहत और याददिहानी करने का हुक्म है। यही वजह है कि याददिहानी की अहमियत को क़ुरआन और हदीस की तालीमात में उजागर किया गया है।

पूरी ज़िन्दगी का सौदा करने का मतलब यह है कि हम ज़िन्दगी के हिस्से-बख़रे नहीं कर सकते और न ही उसको ख़ाने (कम्पार्टमेन्ट) में बांट सकते हैं कि यह तहरीक का कम्पार्टमेन्ट है, यह दुनिया कमाने का कम्पार्टमेन्ट है, और यह कैरियर का कम्पार्टमेन्ट है और यह बीवी-बच्चों का कम्पार्टमेन्ट है। सारे कम्पार्टमेन्ट और हिस्से एक ही हस्ती के लिए हैं, और वह अल्लाह है। इसका यह मतलब भी नहीं है कि कोई दूसरा काम नहीं होगा और हम सब काम छोड़कर सिर्फ़ तहरीक ही का काम करेंगे। इसके अस्ल मानी ये हैं कि तहरीक का अस्ल मक़सद और नस्बुल-ऐन ही ग़ालिब होगा और हर जगह जारी व सारी भी। अगर एक शख़्स अपनी पूरी ज़िन्दगी का सौदा अपने रब से कर ले तो ज़ाहिर बात है कि वह शौहर की हैसियत से या बेटे की हैसियत से या बीवी की हैसियत से या ताजिर की हैसियत से या नौकर की हैसियत से जहाँ भी होगा उसी सौदे के तहत होगा और जो काम भी करेगा उसी सौदे के तहत करेगा। उसका हर काम उसी नस्बुल-ऐन और मक़सद से तय होगा। फिर यह कोई पार्ट टाइम काम नहीं, बल्कि हर वक़्त करने का काम है। इसलिए इसमें पूरी ज़िन्दगी लगानी होगी।

आप इस बात को भी समझ लें कि यह पार्ट टाइम और फुल टाइम का मतलब यह नहीं है कि आदमी सिर्फ़ इसी काम के अन्दर पूरा वक़्त और पूरी ज़िन्दगी लगा दे, बल्कि इसका मतलब यह है कि वह जिस वक़्त, जिस हैसियत में, जहाँ भी होगा और जो वक़्त भी गुज़ार रहा होगा, वह सिर्फ़ इसी काम के लिए होगा और इसी काम में ख़र्च करेगा। यह बात हमेशा उसके सामने रहेगी कि वह अपनी ज़िन्दगी का सौदा अपने रब से कर चुका है। उसकी क़ीमत वह वुसूल करने का इरादा रखता है। उसके बारे में वह सच्चा और मुख़लिस है। उसका इरादा और हौसला सच्चा है और उसी के लिए वह अपना वक़्त लगाएगा।

ज़िन्दगी का सौदा किस क़ीमत पर!

इस सिलसिले में अब समझने की बात यह है कि वह क्या क़ीमत है जिसके लिए हमने अपनी ज़िन्दगी का सौदा किया है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में एक जगह तो यह फ़रमाया—

"अल्लाह की ख़ुशनूदी की चाह में।" (क़ुरआन, 2:207)

यह अल्लाह की ख़ुशनूदी की तलाश है जिसके लिए एक ईमानवाला अपने आप को बेच देता है। दूसरी जगह फ़रमाया—

"हक़ीक़त यह है कि अल्लाह ने ईमानवालों से उनकी जानों और उनके मालों को जन्नत के बदले ख़रीद लिया है।"

(क़ुरआन, 9:111)

अगर इन दोनों आयतों को मिलाकर पढ़ें तो यह बात बिलकुल साफ़ और वाज़ेह है कि अल्लाह की मरज़ी का नतीजा जन्नत है जिसको उसने बड़ी तफ़सील के साथ क़ुरआन मजीद में बयान किया है। अब यहाँ यह बात कहने में भी कोई हरज नहीं है कि सारी ज़िन्दगी का सौदा अस्ल में ईमान ही का तक़ाज़ा और माँग है। क़ुरआन मजीद में ईमान का मतलब सिर्फ़ ज़बान से कुछ अक़ीदों का इक़रार ही नहीं है, बल्कि क़ुरआन के मुताबिक़ ईमान का मतलब और तक़ाज़ा पूरा मुआहदा और तिजारत है

जो आदमी अल्लाह के साथ करता है। ईमान दरअस्ल इस चीज़ का नाम है कि आदमी हर वक़्त और हर काम में और ज़िन्दगी के हर मैदान में सिर्फ़ अपने रब की मरज़ी पूरी करने में लग जाए। अक़ीदे, उनका फ़ल्सफ़ा और उनकी दलीलें और उनका बयान यह बाद की चीज़ है।

अरब के बद्दू, बकरियाँ और भेड़ें चरानेवाले, मक्के के मामूली और बड़े ताजिर जिन्होंने इस्लाम के इस पैग़ाम को क़बूल किया, वे ईमान और अक़ीदों के फ़ल्सफ़ों को नहीं जानते थे, लेकिन ईमान की हक़ीक़त को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने अपना सब कुछ लगाकर अपनी ज़िन्दगी का सौदा अपने रब से किया और जब उस राह पर खड़े हुए तो बग़ैर बड़े-बड़े फ़ल्सफ़ों के वे इस क़ाबिल हो सके कि सारी दुनिया को अपने क़ब्ज़े में ले सकें। यह वह चीज़ है कि निगाहें इस चीज़ पर जम जाएँ। जो चीज़ इसके बदले में मिलनेवाली है उसकी क़द्र और क़ीमत का एहसास हो। क़ुरआन मजीद में इस चीज़ को साफ़ और सीधे तौर पर लफ़्ज़ 'जन्नत' से वाज़ेह किया गया है। तहरीके-इस्लामी के आम कारकुन को चाहिए कि वह अपने दिल की गहराइयों में, अपनी ज़बान पर और अपने हौसलों और इरादों में अपनी निगाहें उसी जन्नत पर जमा दें।

आख़िर क्या वजह है कि जिस क़ुरआन से और जिन हदीसों से हम इक़ामते-दीन, शहादते-हक़ के लिए दलीलें पेश करते हैं उसी क़ुरआन के बड़े हिस्से में उस जन्नत को बयान किया गया है जिसका वादा ईमानवालों से किया गया है और उसकी ख़ुशख़बरी उनको दी गई है। वहाँ कैसी नहरें बहती हैं, वहाँ कंगन पहनाए जाएँगे, वहाँ ऐश और आराम की कैसी-कैसी नेमतें होंगी ये सारी चीज़ें उसी क़ुरआन मजीद के अन्दर मौजूद हैं जिसको हम पढ़ते भी हैं, पढ़ाते भी हैं और जिसकी तरफ़ सारे इनसानों को बुलाते भी हैं। हक़ीक़त में यह आदमी की वह मंज़िल है जिसपर उसकी निगाहें जम जानी चाहिएँ। अगर उस मंज़िल पर आपकी निगाहें जम गईं तो फिर आपके लिए वह मंज़िल भी आसान होगी जिस

तक इस दुनिया में आप पहुँचना चाहते हैं, साथ ही वह दूसरी चीज़ जिसको तुम पसन्द करते हो और चाहते हो कि तुमको मिले, ख़ुदा वह भी तुम्हें देगा, जैसा कि क़ुरआन मजीद में कहा गया है—

> "अल्लाह की तरफ़ से मदद और क़रीब ही में हासिल हो जानेवाली जीत।" (61:13)

लेकिन यह तुम्हारी तिजारत का अस्ल सौदा नहीं है। यह उसकी अस्ल क़ीमत नहीं है। हक़ीक़त में जिस कारोबार की तुमको दावत दी गई है और जो कारोबार तुमने किया है वह तो वह कारोबार है जो दर्दनाक अज़ाब से छुटकारा दे और जन्नत की तरफ़ लेकर जाए। क़ुरआन में है—

> "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! मैं बताऊँ तुमको वह कारोबार जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले। ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और जी तोड़ कोशिश करो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से। यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।" (61:10,11)

मैं आपसे कहता हूँ कि अगर उस हमेशा रहनेवाली जन्नत के आप तलबगार बन जाएँ तो दुनिया की जन्नत के दरवाज़े भी आपके लिए खुल जाएँगे।

अरब के बद्दू, देहाती और बकरियाँ चरानेवाले हमेशा रहनेवाली जन्नत के तलबगार बन गए थे, उसी के लिए जी और मर रहे थे। इसी लिए अल्लाह ने स्पेन से लेकर सिन्ध नदी के तट तक सारी दुनिया को उनके क़दमों में डाल दिया और दुनिया की जन्नत उनके हवाले कर दी। यह उसका वादा है जो उसनें बिलकुल साफ़ और वाज़ेह किया है कि जिसकी जाँच हो जाए कि जीनेवाले अल्लाह के लिए जी रहे हैं, उसकी ख़ुशी की चाहत के लिए जी रहे हैं, उसकी जन्नत के लिए जी रहे हैं तो इस दुनिया की जन्नत भी उनके हवाले कर दी जाएगी। इसलिए कि ज़मीन की विरासत उन्हीं को मिलती है जो नेक हों, जिनके किरदार अच्छे हों और जो भले काम करनेवाले हों। अल्लाह का यह वादा ज़रूर पूरा होकर रहेगा।

क़द्र व क़ीमत का एहसास

इस बारे में जो बात समझनी और जाननी चाहिए वह यह है कि अल्लाह के साथ किए गए इस सौदे और जन्नत की क़द्र व क़ीमत का एहसास ज़रूरी है। अगर क़ीमत के बारे में आदमी यह समझे कि दो पैसे की चीज़ है जो हमें मिल रही है तो फिर आदमी न सरगर्म हो सकता है, न खुदा की राह में निकल सकता है और न अपना सब कुछ लाकर क़ुरबान कर सकता है। क़ुरआन ने तो ईमानवालों से नफ़्स और माल दोनों का मुतालिबा किया है। आमतौर पर हम नफ़्स का तर्जुमा जान से करते हैं और समझते हैं कि इसके मानी ये हैं कि हम जान दे दें और माल ख़र्च करें। हक़ीक़त में नफ़्स के मानी उस सांस के हैं जो आती जाती है। जान देना हालाँकि मुशकिल काम है लेकिन जज़बात में बहकर यह आसान हो सकता है, लेकिन अपनी पूरी ज़िन्दगी, पूरी शख़सियत और पूरी ज़ात को अल्लाह के हवाले कर देना ज़्यादा मुशकिल काम है। क़ुरआन का मुतालिबा यही है कि कारकुन जो भी हो, मोमिन, मुजाहिद या मुहाजिर, अपने नफ़्स और अपने माल दोनों को अल्लाह की राह में लगा दे। लेकिन अस्ल बात यह है कि हमें इस बात का पूरा यक़ीन हो कि उसकी क़ीमत मिलनेवाली है, उस क़ीमत पर हमारे दिल राज़ी हो गए हैं। यह क़ीमत अनमोल है और यहाँ की कोई चीज़ उसके मुक़ाबले की नहीं हो सकती। जन्नत की तलब और चाहत का बड़ा गहरा ताल्लुक़ दिल की इस्लाह से होता है। इससे दिल को रुख़ मिलता है और दिल के अन्दर वह शादाबी और ताज़गी आती है जिसका वादा जन्नत के साथ किया गया है और जिसका ताल्लुक़ अल्लाह की मुहब्बत से है।

अल्लाह से मुहब्बत का तक़ाज़ा

मुहब्बत का लफ़्ज़ सुनकर यह नहीं समझना चाहिए कि यह बस बड़े, मेयारी और मिसाली लोगों को हासिल होती है। अल्लाह तआला ने हर

ईमानवाले की सिफ़त ही यह बयान की है कि वह सबसे बढ़कर अल्लाह से मुहब्बत करता है–

> "ईमान रखनेवाले लोग सबसे बढ़कर अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं।" (क़ुरआन, 2:165)

मुहब्बत को लफ़्ज़ों में बयान करना मुमकिन नहीं है। अगर कोई पूछे कि रंग किसे कहते हैं या ख़ुशबू कैसी होती है तो उसे लफ़्ज़ों में बयान करना मुशकिल है। रंग का ताल्लुक़ देखने से होता है, ज़ाइक़े और स्वाद का चखने से और ख़ुशबू का सूँघने से। यह अपने तजरिबे की चीज़ है और हममें से हर एक को इसका तजरिबा है। अगर माल से मुहब्बत हो तो उसके लिए हम बहुत ज़्यादा कोशिश और भाग-दौड़ करते हैं इसकी बहुत ज़्यादा फ़िक्र हमें सताती रहती है। उसके लिए हम किस तरह रात-दिन एक कर देते हैं और सुबह से शाम तक किस तरह अपने आप को लगाते हैं, इस बात का हममें से हर शख़्स को अच्छी तरह तजरिबा है। बच्चों से मुहब्बत हो जाए तो उनके लिए हम कितने बेचैन होते हैं। क्या हममें से कोई ऐसा है जिसे ज़िन्दगी में मुहब्बत का तजरिबा न हो? हर एक जानता है कि मुहब्बत क्या है, उसकी अलामतें और निशानियाँ क्या हैं और उसके असरात क्या हैं। ज़िन्दगी के अन्दर बख़ूबी उन्हें महसूस किया जा सकता है।

ईमान कोई क़ानूनी समझौता नहीं है जो लिखकर लिया गया हो, बल्कि यह दिल का सौदा है और मुहब्बत का सौदा है। अल्लाह ने साफ़ कहा है कि यह ईमान की निशानी है कि आदमी सबसे बढ़कर अल्लाह से मुहब्बत करे। अल्लाह के रसूल *(सल्ल०)* ने साफ़ कहा है कि "जब तक मैं तुमको अपनी जान, अपने माल और हर चीज़ से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ, तुम मोमिन नहीं हो सकते।" यह ईमान की अलामत है जो तुम्हारे अन्दर होनी चाहिए। इसके बाद इसमें शक की क्या गुंजाइश है कि जब तक इस तरह की मुहब्बत, जो सब मुहब्बतों पर ग़ालिब हो, दिल में नहीं होगी उस वक़्त तक दिल की दुनिया दुरुस्त नहीं होगी। और जब तक

दिल की दुनिया दुरुस्त नहीं होगी, बाहर की दुनिया भी दुरुस्त होनी मुशकिल है।

मुहब्बत की निशानियाँ इतनी साफ़ और वाज़ेह हैं कि उनको आप बड़ी आसानी के साथ देख भी सकते हैं, जाँच भी सकते हैं और परख भी सकते हैं। आप अपने ऊपर ग़ौर कर लीजिए। अपने कामों पर, बातों पर ज़िन्दगी पर, नमाज़ पर, हर चीज़ पर ग़ौर कर लीजिए, आपको अन्दाज़ा हो जाएगा कि आपको अल्लाह से कितनी मुहब्बत है। मुहब्बत होगी तो ईमान के अन्दर मिठास होगी। एक हदीस में आता है कि अगर दिल के टुकड़े करके एक हिस्सा अल्लाह को दे दिया जाए और बाक़ी हिस्से दूसरों को तो वह उसे क़बूल नहीं। क़ुरआन मजीद में एक जगह बताया गया है कि कुछ लोग जानवर ज़ब्ह करते हैं और कहते हैं कि यह हिस्सा ख़ुदा के लिए है और यह हिस्सा उनके लिए जिन्हें उन्होंने खुदा का शरीक बना रखा है। तो इसपर अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो हिस्सा अल्लाह के लिए है वह भी उनको ही पहुँचता है जिन्हें उन्होंने शरीक बना रखा है। वह अल्लाह को नहीं पहुँचता और न ही अल्लाह उसे क़बूल करता है। अल्लाह को तो पूरा दिल चाहिए, और अगर यह उसके हवाले कर दिया जाए तो फिर अल्लाह उसकी हर बात अपने ज़िम्मे ले लेता है। क़ुरआन में है—

"क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है?" (39:36)

जब आदमी अपने सौदे की चीज़ जो उसने तय की है उसको अपनी तरफ़ से खुदा की राह में लगा दे तो कोई वजह नहीं है कि वह पैदा करनेवाला जिससे बढ़कर सच्चा कोई नहीं— "अल्लाह की बात से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है?" (क़ुरआन, 4:87)— अपनी तरफ़ से क़ीमत अदा न करे और उसे हम तक न पहुँचाए।

यह वह चीज़ है जो बिलकुल हमारे सामने है। अगर हम उसपर ग़ौर करें तो यह बात अच्छी तरह समझ में आ सकती है कि अस्ल वजह यह

है कि दिल के अन्दर जो दूसरी मुहब्बतें हैं वे अल्लाह और अल्लाह के दीन के लिए बराबर हैं या उससे ज़्यादा हैं जिसका इक़रार और इज़हार हम अपनी बातचीत से, अपनी तक़रीरों या अपनी तहरीरों से करते हैं। वरना क्या वजह है कि आप एक आदमी से कहें कि फ़ुलाँ कारोबार बहुत फ़ायदेमन्द है। अगर तुम वह ज़मीन आज ख़रीद लो तो कल वह दुगुनी हो जाएगी और वह कोई कार्रवाई न करे। वह उठेगा किसी तरह रूपये जमा करेगा, चाहे इसके लिए उसे बैंक से क़र्ज़ ही क्यों न लेना पड़े। वह लाकर दे देगा। ताकि वह कल दो गुना हो जाए। अगर उससे कहा जाए कि तुम जो आज दे रहे हो यह आँख बन्द करते ही तुमको सात सौ गुना कम से कम ज़रूर मिलेगा और उससे ज़्यादा भी मिल सकता है तो क्या वजह है कि उसकी जेब न खुले और उसका हाथ जेब तक न जाए और वह बैंक बेलेन्स पर साँप बनकर बैठा रहे? इसके अलावा आख़िर क्या वजह हो सकती है कि उसको इस वादे पर जो सात सौ गुना का है यक़ीन नहीं है। अगर यक़ीन है तो उस चीज़ पर जो कल यहाँ इस दुनिया में मिलनेवाली है।

लापरवाही और ग़फ़लत का सबब

यही वजह है कि आदमी दावत के काम के लिए नहीं निकलता। वह देखता है कि उसके रब का बोलबाला दुनिया में नहीं हो रहा है, उस के साथ लगन व ताल्लुक़ के दावे भी करता है लेकिन उसके अन्दर बेचैनी पैदा नहीं होती, चूँकि ज़िन्दगी हिस्सों, टुकड़ों और कई ख़ानों में बंटी हुई है और वे मुहब्बतें भी ग़ालिब हैं जो अल्लाह के अलावा किसी और की मुहब्बतें हैं, और उसे उस क़ीमत पर यक़ीन नहीं है जिसका वादा अल्लाह ने किया है, इसलिए ये सारी ख़राबियाँ बाहर पैदा होती हैं।

मेरा मक़सद यह नहीं है कि पहले आदमी सूफ़ी हज़रात की तरह दिल की दुनिया साफ़ करने, दिल को रगड़ने और माँझने पर लग जाए और जब वह साफ़ हो जाए तो फिर तहरीक के काम के लिए निकले।

बल्कि यह तो एक ऐसा अमल है जो एक-दूसरे के साथ आपस में जुड़ा हुआ और मिला हुआ है। दिल को दुरुस्त करने का तरीक़ा ही यह है कि आदमी तहरीक के काम और दीन के लिए जिद्दोजुहद करने के लिए निकल खड़ा हो और उस काम को भी साथ-साथ करे। एक तरफ़ तो वह अल्लाह के वादे पर यक़ीन रखे और अपनी ज़िन्दगी के सौदे पर यक़ीन करे और इस बात का एहसास करे कि मैं अपना सब कुछ ख़ुदा के हाथ बेच चुका हूँ। अब मेरा कुछ नहीं है, जो मैं अपने पास रख सकूँ।

यह बात हमें 'ख़ुतबात' नामी किताब में बहुत शुरू में बताई गई थी कि ईमान लाने के बाद आदमी नहीं कह सकता कि यह हाथ मेरा है, यह पाँव मेरा है, यह मकान मेरा है और यह माल मेरा है। इनमें से कुछ भी उसका नहीं है। ईमान लाने के बाद वह इनमें से हर चीज़ अपने मालिक, अपने ख़ालिक़ और अपने रब के हाथ बेच चुका है। यह बिलकुल पहला सबक़ है जिसको पढ़कर हम सब इस तहरीक के अन्दर आए हैं। इनसान की फ़ितरत में ग़फ़लत रख दी गई है। हम बार-बार इस तालीम को भूल जाते हैं, इसका इलाज ख़ुदा को याद करने, नसीहत करने और अपने आप को याद दिलाने के अलावा और कुछ नहीं है। यही काम नबी *(सल्ल॰)* भी करते रहे और यही काम हम सबको करना है।

हक़ीक़त में यह बात याद रखने की है कि यह काम अगर हमने किया और अपने आपको उसी क़ीमत पर तैयार कर लिया, जो मैंने ऊपर बयान की है, तो फिर कोई वजह नहीं कि हम हर वक़्त पूरे हौसले और पक्के इरादे के साथ, हरे-भरे, सदाबहार ईमान और जज़्बे के साथ इस काम में न लगे रहें। कोई बाहरी चीज़, कोई बाहर की तबदीली हमारे अन्दर की दुनिया को बदल नहीं सकती। अन्दर की दुनिया में तो इतनी ताक़त हो सकती है कि वह बाहर की दुनिया को बदल दे, मगर बाहर की चीज़ें अन्दर की दुनिया को नहीं बदल सकतीं। क़ुरआन मजीद में जब भी मर्ज़ का पता लगाया गया तो यही बताया गया कि दिल की दुनिया बदल चुकी है, निगाहें किसी और चीज़ पर जमी हुई हैं, वे अपने साथियों से, अपनी तहरीक से और अपने नस्बुल-ऐन और मक़सद से हट गई हैं।

आख़िरत पर नज़र

क़ुरआन मजीद में है—

> "तुममें से कुछ लोग वे हैं जो दुनिया चाहते हैं और तुममें से कुछ वे हैं जो आख़िरत चाहते हैं।" (3:152)

यह बात क़ुरआन मजीद ने उस जमाअत के बारे में कही थी और साफ़ लफ़्ज़ों में कही थी जो मिसाली और नमूने की जमाअत थी। फिर कहा कि जो आख़िरत के चाहनेवाले हैं उन्हीं का नसीब और उन्हीं का हिस्सा दुनिया की कामयाबी भी है। जब लोगों से कहा गया कि अल्लाह की राह में निकलो मगर लोगों ने निकलने में आनाकानी की तो इसपर अल्लाह ने फ़रमाया—

> "क्या तुमने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया?" (क़ुरआन, 9:38)

मतलब यह है कि इस मर्ज़ की जड़ तक़रीरों में कमी नहीं, तरबियतगाहों की कमी नहीं, बल्कि मर्ज़ की जड़ अस्ल में यह है कि आदमी किस चीज़ पर राज़ी है। वह अपनी ज़िन्दगी की, अपनी कोशिशों की और अपने हितों और मेहनतों की क्या क़ीमत लेना चाहता है और कहाँ लेना चाहता है। अगर वह यह क़ीमत दुनिया में लेना चाहता है तो क़ुरआन मजीद में साफ़ तौर पर कहा गया है कि अगर तुम आख़िरत का इरादा करो और उसके लिए कोशिश करो और ईमान और यक़ीन के साथ कोशिश करो तो वह तुमको मिलकर रहेगी। लेकिन अगर दुनिया के लिए करोगे तो यह बात समझ लो कि हम दुनिया में जिसको जितना देना चाहते हैं देते हैं। ज़रूरी नहीं है आप जितना चाहें उतना आपको मिल जाए। इसलिए आख़िरत पर नज़र रहनी चाहिए। दिल के अन्दर यही सौदा समाया हुआ होना चाहिए। उसका ख़याल होना चाहिए। उसी की मुहब्बत सब मुहब्बतों पर ग़ालिब होनी चाहिए और दिल की लगन और इश्क़ उसी नस्बुल-ऐन के साथ होना चाहिए।

तरबियत का अहम ज़रीआ

इसका यह मतलब नहीं है कि हम किसी कोने में बैठकर दिल में इस मुहब्बत को पैदा कर सकते हैं। वह मुहब्बत जो सिर्फ़ (सिर्फ़ का लफ़्ज़ बहुत अहमियत के साथ बोल रहा हूँ), कोनों में बैठकर और अल्लाह को याद करके हासिल होती है वह किसी काम की नहीं। अगर अल्लाह को यही मुहब्बत पसन्द होती तो उसके लिए फ़रिश्ते उसके चारों तरफ़ मौजूद हैं। वे उसका ज़िक्र भी करते हैं, उसकी तस्बीह भी करते हैं, उसकी पाकी भी बयान करते हैं और उससे मुहब्बत भी करते हैं। मगर अल्लाह को तो अस्ल में वे बन्दे पसन्द हैं जो बाहर निकलकर अपने दिल की दुनिया को आबाद करके उसके ज़रीए सारी दुनिया को आबाद करें। इसलिए वह दूसरा काम, जिसके ज़रीए दिल की दुनिया भी बनती है और जो तहरीक के कारकुन की सिफ़त और ख़ूबी होनी चाहिए, दावत का काम है।

दावत और तहरीक

यह तहरीक अस्ल में इसलिए वुजूद में लाई गई है और इसकी कामयाबी का राज़ इस बात में छिपा है कि वह उस ज़िम्मेदारी को अदा करे जो अल्लाह के रसूलों के ज़िम्मे थी। वह ज़िम्मेदारी यह थी कि एक-एक मुहल्ले में, एक-एक आदमी के सामने अल्लाह के दीन की दावत पेश की जाए और उसका गवाह बनकर खड़ा हुआ जाए। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने नबी *(सल्ल.)* से कहा कि हमने तुमको ख़ुशख़बरी देनेवाला, डरानेवाला और इसके साथ अल्लाह की तरफ़ बुलानेवाला बनाकर भेजा है। यही पैग़म्बरी और रिसालत का अस्ल मतलब और मक़सद है जो हमारे सामने मौजूद है। इसी पर हमें अपने आपको जाँच-परखकर देखना है, अपना जाइज़ा लेना है और सोचना है कि यह काम हम कितना कर रहे हैं।

इस तहरीक की शुरूआत सिर्फ़ दावत से हुई थी। लोग जमा हुए

और जमाअत बन गई। जमाअत का बनना ज़रूरी है, इसलिए कि अच्छी और सालेह जमाअत के बग़ैर हम उस मंज़िल का ख़ाब नहीं देख सकते जिसको हम हासिल करना चाहते हैं। लेकिन अच्छी और सालेह जमाअत ख़ुद कोई मक़सद नहीं है। दफ़्तर और ऑफ़िस ख़ुद में मक़सद नहीं है और न ही यह मक़सद है कि इजतिमा और सभाएँ कर ली जाएँ। ये सब तो अस्ल में इस बात के ज़रीए और साधन हैं कि अल्लाह के दीन का पैग़ाम ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचे, और जो लोग इसको क़बूल करें उन्हें अपने साथ लाए।

आप अपने इजतिमा में बैठकर अपने दावती काम का अन्दाज़ा न लगाएँ, बल्कि किसी बाज़ार में या किसी चौराहे पर आप खड़े हो जाएँ और वहाँ से गुज़रनेवाले तीस-चालीस लोगों से आप अन्दाज़ा करें कि कितने लोग हमारी दावत को जानते हैं। इसके बाद आप इस बात का अन्दाज़ा करें कि दावत की यह ज़िम्मेदारी अब आपपर कितनी आइद होती है। आप यह देखें कि हमारा वक़्त, हमारे साधन, हमारे माल, हमारे दफ़्तर के सारे राबते और ताल्लुक़ात और बहुत सारी चीज़ों का उनमें से किसका कितना हिस्सा इस काम में लग रहा है कि हमारी दावत अल्लाह के बन्दों तक पहुँचे और वे उसकी तरफ़ वापिस लौट आएँ।

दिल और दावत

एक आम कारकुन बनने के लिए ये बिलकुल बुनियादी बातें हैं जो मैंने मुख़्तसर तौर पर आपके सामने बयान कर दी हैं। एक यह कि अपने दिल की इस्लाह और उसका रुख़ उसी की तरफ़ करना सारी ज़िन्दगी का सौदा करना अल्लाह से मुहब्बत और उस क़ीमत पर दिल का पूरा इत्मीनान जिसका वादा अल्लाह ने किया है और उसी को अपनी ज़िन्दगी की मंज़िल और मक़सद बनाना। इसका दूसरा पहलू यह है कि अपनी सारी सरगर्मियों में सबसे ज़्यादा अहमियत इस बात को देना कि हम अल्लाह का पैग़ाम, अल्लाह की बात, अपनी दावत, अपना पैग़ाम ज़्यादा

से ज़्यादा इनसानों तक पहुँचाएँ। इसलिए कि यही नबी *(सल्ल.)* का तरीक़ा था। आप *(सल्ल.)* मक्के की गलियों में घूमते थे। उकाज़ के मेलों में जाते थे। आप *(सल्ल.)* ने ताइफ़ का सफ़र इसी मक़सद से किया। पहला मौक़ा मिला तो आप *(सल्ल.)* ने अपने दौर के कई बादशाहों को दावती ख़त भेजे। रसूलों और पैग़म्बरों की हम बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ और काम गिनवाते हैं। अस्ल में रसूल वह है जो पैग़म्बर है, जिसके पास एक पैग़ाम हो और उस पैग़ाम को उसे सारे लोगों तक पहुँचाना है। यही बुनियादी बात है।

इन दो चीज़ों पर अगर आप अपनी तवज्जोह लगा दें तो मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि उनमें से आप जितना हासिल करेंगे उतना ही आप अच्छे दरजे के आम कारकुन बनते चले जाएँगे। इसमें आप जितना ऊपर उठेंगे आप उस मिसाली कारकुन से, उस मोमिन से, मुहाजिर, मुजाहिद, मुत्तक़ी व परहेज़गार और मोहसिन से क़रीब होते चले जाएँगे जिसका नक़्शा क़ुरआन मजीद में खींचा गया है। अपनी गुफ़्तुगू को ख़त्म करते हुए में क़ुरआन मजीद की वह आयत पेश करूँगा जिसमें बताया गया है कि मिसाली इनसान या कारकुन कैसा होता है—

> "हक़ीक़त में तो ईमानवाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर उन्होंने शक न किया और अपनी जानों और मालों से अल्लाह की राह में जिद्दोजुहद की। वही सच्चे लोग हैं।" (क़ुरआन, 49:15)

यहाँ भी अजीब तरीक़े से बात बताई गई है कि मोमिन वह है जो ईमान लाए। इससे मालूम होता है कि मोमिन बस एक नाम है और उस नाम की भी एक सिफ़त है। मानो ईमान दिल की गहराइयों में उतर गया हो। और उसके बाद न उसमें शक पैदा हो, न वे झिझकें, न हिचकिचाएँ, न पीछे हटें, न उनपर सुस्ती तारी हो, न कोई बेचैनी की कैफ़ियत मौजूद हो और वे अल्लाह की राह में अपने माल और जान लगा दें। इसके बाद यह नहीं कहा गया कि यह किसी मिसाली कारकुन का नक़्शा है, बल्कि कहा कि 'सच्चे लोग यही हैं' जो ईमान के वादे में सच्चे हैं और कारकुन

होने के दावे में खरे हैं।

यह रास्ता आपके लिए खुला हुआ है। यह बड़ा आसान, बड़ा सादा और बड़ा सीधा रास्ता है। अगर आप इन दो चीज़ों को मज़बूती से पकड़ लें तो मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि आप बड़े अच्छे कारकुन बन जाएँगे। इन्शाअल्लाह! (अगर अल्लाह ने चाहा!)

● ● ●